झारखण्ड की कला, संस्कृति एवं राजनीति में डॉ0 रामदयाल मुंडा का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन

पीएच.डी. पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध का सार।

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

(समाजिक विज्ञान संकाय)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय धनबाद (झारखण्ड)

सत्रः 2023

शोध निदेशकः—

डॉ0 उमेश कुमार

सहायक प्राध्यापक

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल

विश्वविद्यालय धनबाद (झारखण्ड)

शोधार्थीः—

महेश कुमार दुबे

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल

विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

झारखण्ड की कला, संस्कृति एवं राजनीति में डॉ रामदयाल मुंडा का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन

➢ परिचय (introduction)

झारखण्ड भारत की एक जनजातीय संस्कृति प्रधान राज्य हैं। यहाँ कुल 32 प्रकार के जनजातीय समुदाय मिलते हैं, जिसमे आठ आदिम जनजातीय समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं। झारखण्ड जब बिहार राज्य का अंग था तब भी यह प्रदेश शेष बिहार से अपनी पृथक भौगौलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहचान रखता था। किंतु लंबे समय से यह समुदाय अपनी अस्मिता व बहुआयामी संकटों से जूझता रहा हैं जो आज भी व्याप्त हैं। झारखण्ड में बहुत कम ऐसे लोग रहें हैं जिन्होंने यहाँ की जनजातीय कला एवं संस्कृति को स्थापित करने का प्रयास किया हो। झारखण्ड के टैगोर कहे जाने वाले डॉ रामदयाल मुंडा कतार में सबसे आगे किसी पथप्रदर्शक एवं संस्थापक के रूप में खडे दिखाई पड़ते हैं। क्योंकि एक छोटे से गांव से निकलकर शिकागों विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बननें एवं फिर अपनी मातृभूमि में वापस लौट कर इन्होंने जनजातीय कला एवं संस्कृति को स्थापित करने में जो भूमिका निभाई झारखण्ड में इन्हें संस्थापक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया।

वर्तमान शोध डॉ राम दयाल मुंडा का झारखण्ड की कला, संस्कृति एवं राजनीति के क्षेत्र में योगदानों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन से सम्बंधित हैं। यधपि इसमें वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता भी सम्मिलित हैं। यह एक प्रकार का ऐतिहासिक शोध होगा, जिसकी प्रकृति विश्लेषणात्मक होगी। इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया जाएगा। अध्ययन से संबंधित प्राथमिक सूचनाएं डॉ राम दयाल मुंडा के द्वारा स्वयं लिखी गई पुस्तकों, प्रकाशित लेखों एवं विचारों से प्राप्त किए जाएंगे। वहीं विभिन्न प्रकार की द्वितीयक

सूचनाएं डॉ राम दयाल मुंडा पर किए गए शोधकार्य ,शोधपत्रों ,विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों एवं समाचार पत्रों में प्रकाशित उनके संदर्भ से प्राप्त किए जाएंगे।

यह शोध ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समकालीन है, इसकें पीछे कई कारण है, जैसे – डॉ राम दयाल मुंडा बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व थें, पर इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बहुत कम ऐतिहासिक शोध हुए हैं, वहीं डॉ राम दयाल मुडां झारखण्ड में जनजातीय समुदाय के अधिकारों, कला, संस्कृति एवं पहचान के संरक्षण के प्रभावशाली पैरोकार के रूप में जाने जाते हैं। वर्तमान समय में भी जनजातीय समुदाय अपनी कला एवं संस्कृति के मिटने के संकट से जुझ रही है ऐसे में डॉ राम दयाल मुंडा के योगदानों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता और बढ जाती हैं।

- **संबंधित साहित्य की समीक्षा** (Review of Literature)

डॉ रामदयाल मुंडा पर कई शोधकर्ताओं ने बहुमूल्य कार्य किया है। जैसे –**श्रीवास्तव** (2012,**पृष्ठ –134**) ने अपनी एक अत्यंत महत्वपूर्ण शोधपत्र में डॉ राम दयाल मुंडा के जीवन का वृतांत प्रस्तुत करते हुए बताया है कि जब आदिवासी जगत में बुद्धिजिवियों की नितांत कमी थी दुनिया के सर्वाधिक विकसित एवं आधुनिक परम्परा वाले देश में शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद वे अपने जमीनी मूल्यों एवं स्थानीय परम्पराओं से गहनता से जुड़े रहे। यह शोध डॉ राम दयाल मुंडा के जीवन यात्रा की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार **गांगुली (04 अप्रैल,2017)** ने टेलीग्राफ डेली इंग्लिश, न्यूज़ पेपर में प्रकाशित अपने एक समीक्षा जो आदिवासी मामलों पर डाक्यूमेंटरी और शार्ट

फिल्में बनाने वाले मेघनाथ और बिजू टोपे के द्वारा डॉ राम दयाल मुंडा पर बनाई गयी डाक्यूमेंटरी फिल्म पर है, में बताया हैं कि 70 मिनट की फिल्म जिसका नाम 'नाची से बांची' हैं दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 10 अगस्त को स्क्रीनिंग हुई। इस फिल्म में डॉ0 रामदयाल मुंडा के पैतृक गांव से लेकर अमेरिका और आस्ट्रेलिया में बिताए जीवन एवं इनसे जुड़े महत्वपूर्ण लोगों और घटनाओं को शामिल किया गया हैं। मुंडा ऐसे विरले शख्सियत थे जिनको संगीत नाटक अकादमी और पद्मश्री सम्मान दोनों मिला।

दैनिक जागरण हिन्दी अखबार में छपे अपने लेख में बादल, **सुनील (22 अगस्त 2021)** लिखते हैं कि जिस तरह टैगोर ने सामाजिक–सांस्कृतिक क्रांति के लिए बिगुल बजाया था, उसी तरह डॉ मुंडा ने भारत के आदिवासी आंदोलन को आगे बढ़ाया। झारखण्ड में सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक क्रांति का बिगुल फूंका। वे नागपुरी और मुंडारी में गीत लिखते थें। वे तमाड़ के पास के गाँव के थे। पंचपरगनिया और कुरमाली सहित कई विदेशी भाषाओं पर उनकी पकड़ थी। 90 के दशक के अंत में भारत सरकार द्वारा बनाई गई कमेटी ऑन झारखण्ड मैटर के वे प्रमुख सदस्य थे।

इसी प्रकार **कुमार (2022, पृष्ठ–77)** ने अपने एक अति महत्वपूर्ण शोध कार्य में झारखण्ड के जनजातीय समाज और संस्कृति में परिवर्तन का अध्ययन प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन झारखण्ड के आदिवासी लोगो के बीच समाज और संस्कृति में परिवर्तन के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक और मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण पर आधारित है। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण के प्राथमिक एवं द्वितीयक सूचनाओं का गुणात्मक एवं मात्रात्मक पद्धति से विश्लेषित किया है। इस अध्ययन में शोधकर्ता बतातें है कि जनजातीय समाज में संस्कृति का पैटर्न पारंपरिक रूप से प्राकृतिक

संस्कृति है जो प्रकृति के बीच सहकारिता और सह–अस्तित्व पर आधारित है। विशेष रूप से झारखण्ड में, जनजातीय लोगों के समाज और संस्कृति को 16वीं शताब्दी और 20वीं शताब्दी के मध्य के बीच बाहरी लोगों और घुसपैठियों द्वारा खतरनाक घुसपैठ का सामना करना पड़ा था, जिन्होने उन पर नए नियमों और विनियमों को लागू किया था। इन्हीं सब प्रक्रियाओं से शोषण और पारंपरिक जनजातीय आर्थिक संसाधनो को छीनने की साजिश शुरू हुई जो आदिवासी समाज और संस्कृति में बदलाव लाने के मुख्य कारण थे, और आदिवासी समाज और संस्कृति में बदलाव लाने की ये प्रक्रिया अभी भी जारी है, और चलती ही जा रही है।

इसी प्रकार **मुंडा (2018 पृष्ठ .05)** का शोध कार्य आदिवासी समाज की पहचान, जीवन संघर्ष, राजनीति, पुनर्जागरण, धर्म आदि कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर रामदयाल मुंडा की यह कृति वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनजातीय समाज की वर्तमान स्थिति को समझने का एक अति विश्वसनीय स्रोत है। **घोष एवं मुंडा (2010 पृष्ठ .10)** ने अपने एक अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक में गरीबी से प्रभावित आदिवासी समाज के ऊपर विकास जनित नीतियों एंव कार्यों के प्रभाव की गहन समीक्षा प्रस्तुत किया है और बताया है कि कैसे आदिवासी समाज विकास के प्रयासों से लाभान्वित नहीं हो पाया। अपने एंक अन्य पुस्तक में **मुंडा (1981, पृष्ठ .10)** ने कविता की भाषा विषय पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार **पीटरसन (2017, पृष्ठ .551)** ने अपने अध्ययन में भारत और नेपाल की मुंडा और इंडो–आर्यन भाषाओं के बीच भाषाई अभिसरण का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत किया है। जबकि **कुइरी (2022, पृष्ठ .128)** ने राम दयाल मुंडा द्वारा लिखित पुस्तक आदि–धरम जो झारखंड में कला के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कृति है पर एक

समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। शोधकर्ता ने बताया है कि इस पुस्तक के माध्यम से राम दयाल मुंडा ने सरहुल, कर्मा के त्योहारों के कर्मकांडों, आख्यानों और प्रार्थनाओं का संगह बनाने की कोशिश की। शोधकर्ता बताते हैं यह शोधपत्र उन प्रश्नों पर भी विचार करेगा जैसे आदिवासी संस्कृति माँ प्रकृति से कैसे जुड़ती है ? यह आदि धरम के सरहुल, कर्मा और सोहोराई त्योहारों के पारिस्थितिक पहलुओं की जाँच से भी सम्बंधित है। इसी प्रकार **रिचर्ड (2018, पृष्ठ .10)** ने अपने शोध पत्र में बदलते आर्थिक परिस्थिति में जनजातीय संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया और बताया है कि कैसे आर्थिक वृद्धि एवं इससे सम्बंधित गतिविधियों ने जनजातीय संस्कृति को गहनता से प्रभावित किया है और कई समस्याएं उत्पन्न की है उसमे पहचान की संकट सबसे बड़ी है।

➢ शोध समस्या का अन्वेषण (Problem to be investigated)

- प्रस्तावित शोध में डॉ रामदयाल मुंडा कि जीवनी एवं इनके जीवन के प्रमुख एतिहासिक घटनाओं की जाँच किया जाएगा। इसके अंतर्गत डॉ रामदयाल मुंडा का जन्म, परिवार, प्रारंभिक–शिक्षा, कामकाजी–जीवन एवं इनके जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं का अध्ययन किया जाएगा।
- प्रस्तावित शोध में डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन दर्शन एवं सामाजिक विषयक विचारों की जाँच किया जाएगा। इसके अंतर्गत डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन के वैचारिक पहलु जैसे–जीवन,समाज, अर्थव्यवस्था, संस्कृति आदि के बारे में इनके विचारों की व्याख्या प्रस्तुत की जाएगी।
- प्रस्तावित शोध में डॉ रामदयाल मुंडा द्वारा जनजातीय समाज के उत्थान हेतु किए गए प्रयासों की जाँच करना। इसके अंर्तगत डॉ मुंडा के द्वारा जनजातीय

समाज के अधिकारों, भाषा संवर्धन, संस्कृति संरक्षण एवं प्रसार एवं जनजातीय समाज के समस्याओं के समाधान हेतु योगदान की समीक्षा की जाएगाी।

- प्रस्तावित शोध में डॉ रामदयाल मुंडा की झारखंड की कला, संस्कृति एंव राजनीति में योगदानों की जाँच प्रस्तुत करेगा। इसके अन्तर्गत डॉ मुंडा द्वारा झारखंड के कला एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन, प्रसार एवं इसे वैश्विक पटल पर स्थापित करने में इनकी भूमिका का अध्ययन किया जाएगा।
- प्रस्तावित शोध में डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन दर्शन एवं झारखंड की कला, संस्कृति एंव राजनीति में योगदानों का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता की जाँच किया जाएगा। इसके अन्तर्गत डॉ मुंडा के बहुपक्षीय योगदानों का झारखंड राज्य के वर्तमान स्थिति एवं जनजातीय समुदाय के समक्ष उपस्थित समकालीन समस्याओं एवं चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाएगा।

➢ शोध कार्य का उद्देश्य (Objective Of the Study)

- डॉ रामदयाल मुंडा की जीवनी एवं इनके जीवन के प्रमुख एतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करना।
- डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन दर्शन एवं सामाजिक विषयक विचारों का अध्ययन करना।
- डॉ रामदयाल मुंडा के जनजातीय समाज के उत्थान हेतु किए गए प्रयासों का अध्ययन करना।
- डॉ रामदयाल मुंडा के झारखण्ड की कला, संस्कृति एवं राजनिति में योगदानों का अध्ययन करना।

- डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन, दर्शन एवं झारखंड की कला, संस्कृति में योगदान का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

➢ शोध प्रश्न (Research Question)

- डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन के विभिन्न पहलुओं एवं घटनाओं का क्या इतिहास है ?
- डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन दर्शन एवं सामाजिक विषयक विचार क्या है ?
- डॉ रामदयाल मुंडा ने जनजातीय समाज के उत्थान हेतु क्या–क्या प्रयास किए ?
- डॉ रामदयाल मुंडा का झारखंड की कला, संस्कृति एंव राजनीति में क्या योगदान है ?
- डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन, दर्शन कार्यों एवं झारखंड की कला, और संस्कृति में इनके योगदानों की वतर्मान संदर्भ में क्या प्रासंगिकता है ?

➢ शोध प्रविधि (Research Methodology)

यह एक प्रकार का एतिहासिक शोध है। इस शोध में शोध प्रविधि ऐतिहासिक सर्वेक्षण है। जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया जाएगा। प्राथमिक आंकड़े डॉ रामदयाल मुंडा के स्वयं के लेखों एंव भाषणों से लिया जायेगा। इसमें कुछ भारत सरकार के सूचना प्रसार मंत्रालय के द्वारा प्रकाशित है।

इसके अलावे डॉ रामदयाल मुंडा के जन्म स्थान एंव उनके स्मृति में बनाए गए संग्रहालयों से भी सूचनाएं प्राप्त की जाएगी। साथ ही शोधकर्ता द्वारा तैयार प्रश्नावली एंव साक्षात्कार के माध्यम से भी संबंधित सूचनाएं प्राप्त की जाएगी।

द्वितीयक प्रकार की सूचनाएं अन्य लेखकों के आलेख, शोधकर्ताओं के शोधपत्र, समाचार पत्रों मे प्रकाशित डॉ रामदयाल मुंडा के विचारो पर आलेख आदि से प्राप्त किए जाएंगे। चुँकि यह एक विश्लेषणात्मक शोध है इसलिए आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मात्रात्मक एंव गुणात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया जाएगा। जबकि व्याख्या के लिए – चित्र, आरेख ,टेबल, मानचित्र आदि उपकरणों की सहायता ली जाएगी।

- **प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व (Significance of proposed work)** :– यह शोध ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समकालीन है, इसके पीछे कई कारण है जैसे – डॉ रामदयाल मुंडा बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे, पर इनके व्यक्तित्व एंव कृतित्व पर बहुत कम ऐतिहासिक शोध हुए हैं, वहीं डॉ राम दयाल मुंडा झारखण्ड में जनजातीय समुदाय के अधिकारों, कला संस्कृति एंव पहचान के संरक्षण के प्रभावशाली पैरोकार के रूप में जाने जाते हैं। वर्तमान समय मे भी जनजातीय समुदाय अपनी कला एवं संस्कृति के मिटने के संकट से जूझ रही है ऐसे मे डॉ रामदयाल मुंडा के योगदानो का वर्तमान समय में प्रासंगिकता और बढ़ जाती हैं।
- **शोध सीमांकन एवं भविष्यगत कार्य (Research Limitations and Future Work)** :– प्रस्तावित शोध डॉ रामदयाल मुंडा के झारखण्ड की कला, संस्कृति एवं राजनीति विषयक योगदान पर केंद्रित होगा। यद्यपि इसकें अंतर्गत डॉ मुंडा के जीवन काल के विभिन्न आयामों संबंधी उनकी सोच एवं समकालीन समाज के मुद्दों के प्रति उनकी धारणा एवं इसके समाधान हेतु किए गए प्रयासों की समीक्षा भी सम्मिलित है। भविष्य में शोधकर्ता डॉ रामदयाल मुंडा के बहुपक्षीय योगदानों के परिप्रेक्ष्य में अलग–अलग शोधकार्य कर सकते हैं। जैसे – डॉ रामदयाल मुंडा का जनजातीय समाज के उत्थान में योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन, इसी प्रकार डॉ रामदयाल मुंडा के सामाजिक विचारों का अन्य समकालीन समाज सुधारकों के साथ जोडकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इसी प्रकार डॉ रामदयाल मुंड़ा के राजनीतिक दर्शन का समकालीन भारतीय राजनीति व झारखण्ड के जनजातीय राजनीतिक चेतना पर प्रभाव का ऐतिहासिक अध्ययन किया जा सकता है।

➢ संभावित अध्यायीकरण (Tentative Chapterisation) :–

प्रस्तावित शोध में कुल पांच अध्याय होंगे–

भूमिका

- **अध्याय – i :** डॉ रामदयाल मुंडा का प्रारंभिक जीवन।
- **अध्याय – ii :** डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन दर्शन एवं सामाजिक विषयक विचार।
- **अध्याय – iii :** डॉ रामदयाल मुंडा के जनजातीय समाज के उत्थान हेतु किए गए प्रयास।
- **अध्याय – iv :** डॉ रामदयाल मुंडा की झारखंड की कला , संस्कृति एवं राजनीति में योगदान।
- **अध्याय – v :** डॉ रामदयाल मुंडा के जीवन, दर्शन एवं झारखंड की कला और संस्कृति में योगदानों का वतर्मान संदर्भ में प्रासंगिकता।

उपसंहार

ग्रंथ सूची

➢ संदर्भ सूची (References) :–

- श्रीवास्तव, वी. के.(2012). *'ओबीटूएरीः डॉ राम दयाल मुंडा 23 अगस्त 1939–30 सितम्बर 2011'* : सोशल चेंज, वॉल्यूम– 42, इशू–01, पृष्ठः 131–134.
- गांगुली, अचिन्त्या (04 अप्रैल 2017). *'राम दयाल मेनी फेसट्स नाची से बांची'* (डॉ फॉर सर्वाइवल) 70– मिनट फिल्म ऑन वन ऑफ झारखण्ड बेस्ट नोन संस, टेलीग्राफ, डेली इंग्लिश, न्यूज पेंपर।
- बादल सुनील (22 अगस्त, 2021) *'झारखंड के बौद्धिक और सांस्कृतिक आंदोलन के प्रणेता'* – डॉ राम दयाल मुंडा, दैनिक जागरण, हिंदी दैनिक, रांची।

- कुमार ,राकेश (2022). *'सोसाइटी एंड कल्चर चेंज इन ट्राइबल पीपल ऑफ झारखंड,'* टूरिज्म हेरिटेज एंड कल्चरल स्टडीज, वॉल्यूम –02, इशू–01, पृष्ठ : 73–77 |
- मुंडा, आर (2018). *'आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल',* रामबुल प्रकाशन, रॉची झारखंड, पृष्ठः1–256 |
- घोष, ए. के. एवं मुंडा, आर.(2010). *'द अदर साइड ऑफ डेवलपमेंटः द ट्राइबल स्टोरी',* कोणार्क पब्लिषर्स पीवीटी लिमिटेड, पृष्ठः 1–350 |
- मुंडा, आर (1981) *'लैंग्वेज ऑफ पोएट्री',* हयुमनीटीस पब्लिकेशन, राँची, झारखंड, पृष्ठः 10 |
- पीटरसन, जे (2017). *'झारखंड एस अ लिंगउस्टिक एरियाः लैंग्वेज कांटेक्ट बीटवीन इंडो– आर्यन एंड मुंडा इन ईस्टर्न– सेंट्रल साउथ एशिया',* कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठः 551–574 |
- कुइरी, हरेकृष्णा (2022) *'मुंडारी कल्चर एंड फेस्टिवल्सः अन एकोसोफिकल स्टडी ऑफ रामदयाल मुंडास आदि – धर्मा',* न्यू लिट्रेरिया, वॉल्यूम–03, इशू–01, पृष्ठः 128–133 |
- रिचर्ड, जे. बी. (8 फरवरी 2018). *ट्राइबल कल्चर एंड इकनोमिक ग्रोथ' प्रॉपर्टी एंड एनवायरमेंट रिसर्च सेंटर (पी.इ.आर.सी.),* पब्लिकेशन, मोंटाना, पृष्ठ : 1–10 |